[This question paper contains 2 printed pages.]

Deshbandhu College Library, Kalkaji, New Delhi-19

(1)

Your Roll No. 2019

Sr. No. of Question Paper : 2882 **JC**

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra (पाश्चात्य काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

औदात्य की परिभाषा देते हुए उसके मूलभूत तत्वों का विवेचन कीजिए।

2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धांत का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

'कविता व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं व्यक्तित्व से पलायन है।' -- इस कथन के संदर्भ में इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत की समीक्षा कीजिए।

3. स्वछंदतावाद की प्रवृतियों पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

उत्तरसंरचनावाद का विश्लेषण कीजिए।

4. बिंब एवं प्रतीक की परिभाषा देते हुए काव्य में उनकी भूमिका स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

काव्य में फैंटेसी के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (9+9+9=27)

(i) विरेचन सिद्धांत

(ii) परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा

(iii) कॉलरिज की काव्यभाषा विषयक मान्यता

(iv) संरचनावाद

(v) विसंगति और साहित्य

(vi) काव्य में विडंबना बोध

[This question paper contains 4 printed pages.]

(2) Your Roll No. 2019

Sr. No. of Question Paper : 2909 **JC**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : Hindi Naatak / Ekanki
(हिंदी नाटक/एकांकी)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS**

Semester : V

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (9×3=27)

(क) लरि बैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी।
करि कलह बुलाई जवनसैन पुनि भारी।।
तिन नासी बुद्धि बल विद्या धन बहु बारी।
छाई अब आलस-कुमति-कलह अँधियारी।।
भए अंध पंगु सब दीन-हीन बिलखाई।
हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

P.T.O.

अथवा

संतोष ने भी बड़ा काम किया। राजा-प्रजा सबको अपना चेला बना लिया। अब हिंदुओं को खाने मात्र से काम, देश से कुछ काम नहीं। राज न रहा, पेनसन ही सही। रोजगार न रहा, सूद ही सही। वह भी नहीं, तो घर ही का सही, 'संतोष परम सुखं' रोटी ही को सराह-सराह के खाते हैं। उद्यम की ओर देखते ही नहीं। निरुद्यमता ने भी संतोष को बड़ी सहायता दी। इन दोनों को बहादुरी का मेडल जरूर मिले। व्यापार को इन्हीं ने मार गिराया।

(ख) प्रेम का नाम न लो। वह एक पीड़ा थी जो छूट गई। उसकी कसक भी धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। राजा मैं तुम्हें प्यार नहीं करती। मैं तो दर्प से दीप्त तुम्हारी महत्वमयी पुरुष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने की दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं। अपने तेज की अग्नि में जो सब कुछ भस्म कर सकता हो, उसका दृढ़ता का आकाश के नक्षत्र कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकते। तुम आशंका मात्र से दुर्बल-कंपित और भयभीत हो।

अथवा

राजनीति ? राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक संबंध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर

समझने की भूल कर सकते हो, परंतु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है, शकराज ! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ग) यह हमारा सौभाग्य है कि हमें गांधी जी की बकरी मिल गई। कुछ मिलना कुछ खोना भी होता है। हम जितना खोने को तैयार रहते हैं उससे पता चलता है कि हम कितना पाना चाहते हैं। इस बकरी ने हमेशा दिया है। आपको आजादी दी, एकता दी, प्रेम दिया। आज भी बहुत कुछ देने को मुंतजिर है। पर आप लेना भूल गए हैं। क्योंकि आप देना भूल गए हैं।

अथवा

बेटा, बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं- बड़प्पन तो मन का होना चाहिए। और फिर बेटा, घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी। लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी सारी घृणा धुंधली पड़कर लुप्त हो जाएगी। और महानता भी बेटा, किसी से मनवाई नहीं जा सकती, अपने व्यवहार से अनुभव कराई जा सकती है। ठूंठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शीतल-सुखद छाया मन के सारे ताप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगंध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

2. 'भारत-दुर्दशा' नाटक में चित्रित 'भारत दुर्देव' और 'सत्यानाश फौजदार' की चारित्रिक विशेषताएँ को स्पष्ट करें। (12)

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक की प्रासंगिकता का विवेचन कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में ध्रुवस्वामिनी और कोमा के माध्यम से स्त्री समस्याओं को उजागर किया गया है। इस कथन की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल-संवेदना स्पष्ट करें।

4. 'बकरी' नाटक के 'युवक' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

'बकरी' नाटक में अभिव्यक्त व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए इसके प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए।

5. 'स्ट्राइक' एकांकी मध्यवर्गीय समाज के पारिवारिक संबंधों में आए तनाव को अभिव्यक्त करती है- इस कथन की समीक्षा करें। (12)

अथवा

एकांकी के तत्वों के आधार पर 'दीपदान' की समीक्षा करें।

This Question Paper Contains 2 printed Pages

Roll No. 2019

S.No of Question Paper : 2912 (3) G

Unique Paper Code : 11011504

Name of the Paper : मीडिया लेखन और सामाचार पत्र निर्माण

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi Patrakarita Evam Jansanchar

Semester : V

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY

Time : 3 Hours Maximum Marks : 75

प्रश्न–1 : मीडिया लेखन में भाषा दक्षता की भूमिका उजागर कीजिए। 15

अथवा

मीडिया लेखन के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न–2 : प्रिंट माध्यमों से आप क्या समझते हैं। प्रिंट माध्यमों के लिए लेखन की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

टेलीविजन के लिए लेखन की प्रक्रिया की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

प्रश्न–3 : समाचार–पत्र–निर्माण में समाचार मूल्यों व समाचार स्रोतों की भूमिका का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

पृष्ठ सज्जा किसे कहते हैं! उसके तत्त्वों की सविस्तार चर्चा कीजिए।

प्रश्न–4 : संपादन का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए लेखन संपादन के किन्हीं दो साफ्टवेयर का उदाहरण सहित परिचय दीजिए। 15

अथवा

किसी भी समसामयिक विषय पर संपादकीय लिखिए।

प्रश्न–5 : किन्हीं दो पर टिप्पणी कीजिए। 15

(क) वार्ता

(ख) रेडिया लेखन

(ग) फोटाशॉप

(घ) मीडिया शब्दावली ।

This question paper contains 4 printed pages.

(4) Your Roll No. 2019

Sl. No. of Ques. Paper : **2981**

Unique Paper Code : **12057503**

Name of Paper : **अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य**

Name of Course : **B.A. (Hons.) : CBCS : DSE–I**

Semester : **V**

Duration : **3 hours**

Maximum Marks : **75**

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

***सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।*

1. दलित विमर्श की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में भारतीय और पाश्चात्य अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए। 15

2. किन्हीं **तीन** अंशों की व्याख्या कीजिए: 10×3=30

(क) 'यह खोह-कन्दरा या अंध-कूप नहीं, जिसका दूसरा छोर होता नहीं हो। सुरंग का दूसरा छोर होता ही है। चाहे वह कितनी भी टेढ़ी-मेढ़ी और लम्बी क्यों न हो। जैसे कोई रात कितनी भी डरावनी, अंधेरी और लम्बी लगने वाली हो, अंततः उसका सवेरा तो होगा ही। कम से कम इस सुरंग में तुम्हें झाड़ झंखाड़ों, कांटे कंकड़ों, ठोकर लग सकने वाले

P. T. O.

पत्थरों और ऊबड़-खाबड़पन का तो अहसास नहीं हो रहा है। बस, आजू-बाजू की टक्करों को हिम्मत से बर्दाश्त करते रहे। जब चल ही दिए हो तो यह सुरंग कहीं न कहीं तो तुम्हें पहुँचायेगी ही। और वही तुम्हारा गंतव्य व भवितव्य होगा। उस बिन्दु पर तुम्हें क्या करना है यह वक्त आने पर सोचना'— गोविंद गुरू के भीतर की चेतना ने उनके प्रश्नों की गुत्थी को सुलझाने का प्रयास किया।

अथवा

"मतलबपरस्त है, खुदगर्ज़ है, नाससमझ है, पढ़े-लिखे जाहिल हैं। औरत से हर शक्ल में सुख हासिल करना चाहते हैं, मगर बदले में देने वाला दिल नहीं रखते। पढ़ी-लिखी लड़कियों से डरते हैं। मैं तो कहता हूँ, कानून और औरतों की मदद इन दोगले मौलवियों और कनूनदां के जरिए नहीं होगी। औरत को खुद हदीस और कानून समझकर अपनी लड़ाई लड़नी पड़ेगी ... मेरे ऐसे खयालात हैं। इसलिए सरकार हो या आम आदमी, मुझसे कतराता है ... किसी सलाह-मशवरे के वक्त जाहिलों की फौज हर समाचार-पत्र में तस्वीर के संग छपी नजर आती है। नॉन-इशू को इशू बनाकर लोग लुत्फ लेते हैं।

(ख) तुम अपनी खातिर स्वतन्त्रता को समझ रहे हो अवश्य

लाजिम।

मगर करोड़ों ही आदि हिन्दू गुलामी से क्या जड़े रहेंगे?

जो चाहते हो कि शक्तिशाली हो एक दुनिया का देश

भारत।

तो रोटी-बेटी से फिर 'हरिहर' कहो तो कब तक फिरे

रहेंगे?

अथवा

मन मेरे! अब रेखा लांघो

आए तो आए

वह वन्य

छद्मधारी

अविचारी

काल खंडित कलंकित

ले जाए तो ले जाए मंदिर में ज्योतित

उजाले का प्राण करती

कंपित निर्धूम शिखा सी

यह अनिमेष लगन

कौन वहाँ आतुर है

किसे यहाँ देनी है

ऊँचा ललाट रखने को

अग्नि की परीक्षा वह

(ग) मतदान बंद होने के बाद मैं अपने पिता तथा माँ के साथ वापस घर आ रहा था, तो पिता जी ने मुझे बताया कि बाबा हरिहर दास ने उन्हें दो रुपया दिया, इसलिए उन्होंने 'रामराज' को वोट दे दिया। 'रामराज' का मतलब स्वामी करपात्री जी की 'रामराज्य परिषद' नामक पार्टी से था। यद्यपि मुझे राजनीति का कोई ज्ञान नहीं था किन्तु मेरा स्वाभाविक झुकाव कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ था। विशेष तौर पर 'ललका झंडा मोटका डंडा' वाले अमिट प्रभाव के चलते, मुझे पिता जी के दो रुपए वाले प्रकरण से बहुत ग्लानि हुई, लेकिन उनसे कुछ कह नहीं पाया।

अथवा

एक बार मैं फिर सड़क के दूसरी ओर देखती हूँ। वहाँ खरीदारी का शोर है। सूरज खो गया शहर के उफनते फेनिल शोर-शराबे में और शाम— न्यूयॉर्क की शाम अभी तक पूरी तरह डूबी नहीं है। मैं स्तम्भित-सी अचानक सड़क पर नीले और लाल रंगों का छिड़काव देखने लगती हूँ। गोधूलि वेला और लाल बत्ती के जलते ही तेज रफ्तार से दौड़ती हुई गाड़ियों का रुकना और फिर थोड़ा दम लेकर अजाने निकलती हुई साँसों के साथ हवाओं का आँचल पकड़ क्षितिज की ओर दौड़ जाना, मुझे और अकेला कर जाता है। मेरे भीतर एक आदिम वेदना सिसक उठती है। आखिर इतना भी क्या गुस्सा कि यों बीच बाजार में मुझे अकेला छोड़ डॉक्टर साहब चले गए। मैं वापस होटल भी नहीं लौट सकती, सारे पैसे तो उनके पास जो थे।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(क) 'धूणी तपे तीर' आदिवासी शहादत की घटना पर केन्द्रित उपन्यास है। इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

(ख) मुर्दहिया और दलित चेतना

(ग) पितृसत्ता

(घ) 'कितनी व्यथा' की मूल संवेदना

(ङ) 'सलाम' कहानी में अभिव्यक्त समाज

(च) संथाल क्रांति **अथवा** पलामू विद्रोह। $10\times3=30$

[This question paper contains 2 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

(5) **Your Roll No.** 2019

Sr. No. of Question Paper : 3148 **J**

Unique Paper Code : 12057505

Name of the Paper : भारतीय साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi–CBCS-DSE II**

Semester : V

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय साहित्य के सामासिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

भाषा, संस्कृति और साहित्य का अंत:संबंध स्पष्ट कीजिए।

2. वैदिक और लौकिक संस्कृत साहित्य के स्वरूप पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

P.T.O.

पालि एवं प्राकृत साहित्य का परिचय देते हुए उसके योगदान की चर्चा कीजिए।

3. गुजराती साहित्य के योगदान पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

आधुनिकता-पूर्व हिंदी-इतर भारतीय साहित्य पर विचार कीजिए।

4. स्वाधीनता आन्दोलन का तत्कालीन हिंदी-साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा ? सविस्तार वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

भारतीय साहित्य के प्रमुख आंदोलनों की चर्चा करते हुए उनके साहित्य पर प्रभाव की विवेचना कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए - (9×3=27)

(i) आधुनिकता पूर्व तमिल साहित्य

(ii) अपभ्रंश साहित्य

(iii) उर्दू साहित्य

(iv) नवजागरण

(v) मराठी साहित्य

(vi) भक्ति आंदोलन

(vii) बाँग्ला पद्य साहित्य